बहस सिर्फ यह सिद्ध करती है कौन सही है और बातचीत यह तय करती है क्या सही है।
– अज्ञात

प्रयासों पर भी नजर

इस परेशानी के बीच हालात सुधारने की कवायद कई स्तरों पर जारी है। स्वास्थ्यकर्मी तो इस मोर्चे पर डटे ही हुए हैं, अपनी वैक्सीन बनाने की कोशिशों के अलावा इसके लिए दुनिया भर में चल रहे प्रयासों पर भी नजर रखी जा रही है।

अमित वर्मा।

देश में कोरोना का दायरा तमाम कोशिशों के बावजूद फैलता ही जा रहा है। रोज सामने आने वाले नए केसों की गिनती में भारत दुनिया की चोटी पर पहुंच चुका है। इस परेशानी के बीच हालात सुधारने की कवायद कई स्तरों पर जारी है। स्वास्थ्यकर्मी तो इस मोर्चे पर डटे ही हुए हैं, अपनी वैक्सीन बनाने की कोशिशों के अलावा इसके लिए दुनिया भर में चल रहे प्रयासों पर भी नजर रखी जा रही है।

इसी क्रम में सरकार ने विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाई है जिसकी अगुआई नीति आयोग के डॉ. वीके पॉल करेंगे। यह समिति वैक्सीन मिल जाने की स्थिति में उसकी पहचान, खरीद, वितरण, फाइनैंस आदि तमाम पहलुओं का ख्याल रखते हुए जल्द से जल्द उसका व्यापक भारतीय आबादी तक पहुंचना सुनिश्चित करेगी। इस बीच पुणे के सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) ने गावी द वैक्सीन अलायंस और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के साथ मिलकर कोरोना वैक्सीन के 10 करोड़ डोज तैयार करने का समझौता किया है।

एसआईआई दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीन उत्पादक है और इस समझौते के तहत उसे 15 करोड़ डॉलर दिए जा रहे हैं ताकि 2021 आधा बीतने तक वह तीन डॉलर (करीब 225 रुपये) प्रति डोज की कीमत पर वैक्सीन के 10 करोड़ डोज उपलब्ध करवा दे। खास बात यह कि इस समझौते में इसका कोई जिक्र नहीं है कि जिस वैक्सीन का उत्पादन होना है, वह है कौन सी। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि जो ट्रायल चल रहे हैं उनमें कौन सी वैक्सीन आगे निकलती है।

बहरहाल, चाहे सरकार के स्तर पर हो या गैरसरकारी, वैक्सीन के उत्पादन और वितरण से जुड़ी तैयारियों की अहमियत से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन वैक्सीन डिवेलप करने के काम पर ऊपर से नजर रख रहे शीर्ष विशेषज्ञों की सुनें तो स्थिति खास उत्साहवर्धक नहीं है। वाइट हाउस के कोरोना वायरस अडवाइजर डॉ. एंटनी फॉसी का कहना है कि मौजूदा हालात में 98 फीसदी या इससे ज्यादा सुरक्षा की गारंटी देने वाले टीकों की उम्मीद ही नहीं की जा सकती।

वैज्ञानिक चाहते हैं कि 75 फीसदी तक सुरक्षा देने वाला टीका बन जाए। हालांकि वाइट हाउस इसके लिए तैयार है कि अगर 50 फीसदी सुरक्षा की गारंटी वाला टीका मिल जाता है तो उसे भी मंजूरी दे दी जाएगी। दूसरा महत्वपूर्ण सवाल अभी अनुत्तरित ही है, और वह यह कि ऐसा टीका बन गया तो उसका असर कितने समय तक रहेगा। इसका जवाब टीका बनने के कुछ समय बाद ही मिल पाएगा, जब हर महीने की जांच से यह पता किया जाएगा कि शरीर में इससे बनने वाली एंटीबॉडीज कब तक असरदार रहती हैं। जाहिर है, वैक्सीन हासिल करने और लोगों तक उसे पहुंचाने की तैयारियां वाजिब हैं, लेकिन टीके से बहुत ज्यादा उम्मीद पालना उचित नहीं होगा। अपने बचाव की लड़ाई अभी लंबे समय तक हमें मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग के सहारे ही लड़नी है।

ब्रह्माण्ड

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

आप को बस अपने आप को ऐसे बनाना है कि आप कोई कल्पनायें न करें, अच्छी या बुरी। आप कोई भगवान या शैतान न बनाएं, स्वर्ग और नर्क, अच्छा और खराब न बनाएं। ऐसा कुछ भी न हो कि, ष्मैं इस व्यक्ति को पसंद करता हूँ, उसे नहीं करताष्। आप हर चीज को उसी तरह से देखना सीख लें, जैसी वो है, बस यही सब कुछ है। किसी खास समय पर, कुछ विशेष गतिविधि के लिये, हमें चीजों को एक विशेष रूप में देखना पड़ सकता है। बाकी समय आप उन्हें बस वैसी ही देखिए, जैसी वे हैं।

अगर आप चीजों को वैसे ही देखते हैं जैसी वे हैं, तो आप देखेंगे कि जीवन केवल इस या उस रूप में नहीं होता। ये पूरे ब्रह्माण्ड में हर तरफ विस्फोटित हो रहा है। यह ब्रह्माण्ड एक जीवित ब्रह्माण्ड है।

संपादकीय

शहादत को मत भूलना

पूरा देश अपनी आजादी का जश्न मना रहा है। लेकिन क्या आज आप जिस स्तर पर भी हैं, उनकी आजादी को लेकर जिन्होंने कीमत चुकाई है, उनके बारे में, उनके सपनों के बारे में, उनके उन लक्ष्यों के बारे में जिनके लिए उन्होंने अपनी शहादत दे दी, आपने कभी सोचा है? क्या आपने कभी सोचा है कि आज जिस आजादी को आप एन्जॉय कर रहे हैं, उसके लिए कितनों ने अपना बहुत कुछ खोया है? क्या आप अपनी जिंदगी के हर दिन में आने वाले किसी बेहद खूबसूरत से किस्से को लेकर उन्हें शुक्रिया कहते हैं? क्या आपने ये पता लगाने की कोशिश की, कि जिस आजादी के साथ आपका परिवार जी रहा है, उस आजादी के लिए जिन्होंने अपने परिवार की परवाह नहीं की, आज उनका परिवार कैसे जी रहा है? क्या आपने कभी दिन छोड़िए, सप्ताह छोड़िए, महीना छोड़िए। साल में भी कभी उनके बारे में सोचा है? कभी उनके लिए बेहतर करने की कोशिश की है?

शायद नहीं! बेहद स्वार्थी हैं हम३ हमें एक रखने के लिए उन्होंने अपनी कुर्बानी दी थी, लेकिन हमें कोई भी बांटकर चला जाता है। हमें पता होता है कि वो हमें बांट रहा है लेकिन फिर भी निजी स्वार्थ में, लालच में हम उसके चरणों में बैठे रहते हैं। उन्होंने भारतीयता को धर्म मानकर खुद को बलिदान कर दिया लेकिन वो हमारे पड़ोस में रहने वाले व्यक्ति से ईर्ष्या करता है, और हम खुश होते हैं। हमें पता है कि भले ही हमारे पड़ोसी का नाम 'अब्दुल' है लेकिन वो उस 'रमेश' से पहले हमारे बुरे वक्त में खड़ा होगा जो चंद सालों के लिए एक खास कुर्सी पर बैठकर 'सरकार' बन बैठा है।

चंद्रशेखर भी लंबा समय वहीं गुजारते थे। एक दिन वह रामनाथ गोयनका, मोहन धारिया और नानाजी देशमुख के साथ इंडियन ऑयल गेस्ट हाउस में आए।

अफवाह को मिले पंख

हरिवंश नारायण सिंह।।

जेपी एक बार गंभीर रूप से बीमार हो गए और उनका इलाज मुंबई के जसलोक अस्पताल में चल रहा था। तब मैं धर्मयुग पत्रिका में पत्रकार के रूप काम करता था। तत्कालीन संपादक धर्मवीर भारती ने मुझे और अनुराग चतुर्वेदी को अस्पताल के आसपास लगातार नजर रखने की ड्यूटी दी थी। चंद्रशेखर भी लंबा समय वहीं गुजारते थे। एक दिन वह रामनाथ गोयनका, मोहन धारिया और नानाजी देशमुख के साथ इंडियन ऑयल गेस्ट हाउस में आए। वहां सभी जेपी के स्वास्थ्य की चर्चा करते हुए भावुक हो गए।

गोयनका ने चंद्रशेखर से कहा कि अगर जेपी को कुछ हो जाता है तो उनका अंतिम संस्कार ठीक उसी तरह होना चाहिए जिस तरह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का हुआ था। चंद्रशेखर उनकी बातों से सहमत नहीं हुए और कहा कि यह सरकार को तय करना चाहिए न कि इसके लिए दबाव बनाया जाना चाहिए। मोहन धारिया ने कहा कि वह इसके लिए सरकार के अंदर अपने करीबियों से बात करेंगे। उन्होंने इसके लिए सबसे पहले मोरारजी देसाई, चरण सिंह और जगजीवन राम से संपर्क किया। लेकिन इससे कोई लाभ नहीं हुआ। अंत में जॉर्ज फर्नांडीस से

संपर्क किया गया। लेकिन वहां से यही संदेश आया कि वे पहले ही इस बारे में इन तीनों से बात कर चुके हैं जिसे मना कर दिया गया। यह सुनकर गोयनका को आघात लगा। उन्हें दुरूखी देख चंद्रशेखर ने भरोसा दिलाया कि सरकार का जो भी फैसला हो वे अपने स्तर पर सुनिश्चित करेंगे कि जेपी को मौत के बाद राजकीय सम्मान मिले।

इसके बाद तीनों फिर अस्पताल लौट आए। लौटने के बाद वहां पहले से मौजूद नानाजी देशमुख से चंद्रशेखर ने कहा कि वे राज्यों के सीएम से जेपी को राजकीय सम्मान देने की बात करें अगर उनकी मृत्य हो जाती है।

प्रस्ताव आया कि देशमुख जनता पार्टी शासित राज्यों के सीएम से बात करेंगे तो चंद्रशेखर कांग्रेस शासित राज्यों के सीएम से। जब ये आपस में बात कर रहे थे और बीच–बीच में सीएम से भी बात होने लगी तो वहां मौजूद इंटेलिजेंस एजेंसी के लोगों को लगा कि ये बातें इसलिए हो रही हैं कि शायद जेपी की मौत हो चुकी है। एजेंसी ने यह बात आगे बढ़ानी शुरू कर दी। राज्य मुख्यालय होते–होते दिल्ली और अंत में पीएमओ तक यह जानकारी पहुंच गई। हैरानी तब हुई जब खबर की बिना सत्यता जांचे पीएम मोरारजी देसाई ने संसद के अंदर यह सूचना प्रसारित कर दी।

इस बीच चंद्रशेखर अपने साथियों के साथ गेस्टहाउस पहुंचे जहां पता चला कि दिल्ली में उनके दल के सारे नेता संसद में जेपी की मौत पर शोक व्यक्त करने गए हैं। वे सभी इस बात पर हैरान हो गए कि अभी तो अस्पताल से उनसे मिलकर आए थे। हड़बड़ी में वे सभी अस्पताल की ओर दौड़े। वहां देखा कि भारी भीड़ अस्तपाल की ओर से जा रही थी। जेपी की मौत की खबर आग की तरह फैल चुकी थी। अस्पतालकर्मी भीड़ देखकर बुरी तरह डर गए थे। तभी एक अंबेसेडर कार को आता देख चंद्रशेखर उस ओर दौड़े और उसपर चढ़ गए। वहां से उन्होंने कहा कि मौत की खबर अफवाह है और सभी लौट जाएं। तब जाकर मामला शांत हुआ।

चंद्रशेखर ने बताया कि जेपी से मिलना उनकी जिंदगी में बड़ा बदलाव लाने वाला लम्हा था। चंद्रशेखर ने उस मुलाकात और उसके पीछे के घटनाक्रम को याद करते हुए कहा कि उन्होंने दिल्ली में सोशलिस्ट पार्टी के पीपल्स डे इवेंट में शामिल होने के लिए ट्रेन का टिकट लिया था।

सूडोकु नवताल- 5442

सरल

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5441 का हल

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

जेपी–चंद्रशेखर की पहली मुलाकात

मोहन। शुरू में चंद्रशेखर पब्लिक मीटिंग कराने को लेकर सशंकित थे। पहली बात कि ग्रीष्मावकाश के कारण यूनिवर्सिटी में छुट्टियां थीं और दूसरी यह कि वकील समूह की ओर से किस तरह की प्रतिक्रिया मिलेगी इस बारे में वह आश्वस्त नहीं थे। लेकिन अपने संदेह को दरकिनार करते हुए गेंदा सिंह को बोले कि अगर वे चाहते हैं कि जेपी की पब्लिक मीटिंग हो तो वह मदद करने को तैयार हैं। उन्होंने दिल्ली जाने का इरादा छोड़ दिया और अपने दोस्त– रामेश्वर बाली और काशीनाथ मिश्रा से मदद मांगी कि वे जेपी की पब्लिक मीटिंग इलाहबाद में करवा दें। इन लोगों को तब यह भी पता चला कि जेपी कई मजदूर संगठनों को भी हेड करते थे। इसके बाद चंद्रशेखर ने इन संगठनों से भी सहयोग का अनुरोध किया। छोटे दुकानदारों और आम लोगों से डोनेशन मांगे गए। हालांकि उनमें कई ऐसे थे जो उनकी पब्लिक मीटिंग कराने के इच्छुक नहीं थे।